HELPING HAND

HH

ALWAYS BE FIRST

Vansh Dwivedi
(Helping Hand)

UoA :Helping hand

WhatsApp group

Scan this QR code using the WhatsApp camera to join this group

BA-I (2) (FREE NOTES) (Subsidiary Group of Helping Hand.)

WhatsApp group

Scan this QR code using the WhatsApp camera to join this group

ALLAHABAD UNIVERSITY

UNSOLVED PAPER

UP-TO-DATE

B.A. Part- II

HINDI

Price Rs. 14/-

SP

SHIVANSH PUBLICATION

Allahabad

Vansh Dwivedi Helping Hand

नवीनतम संशोधित पाठ्यक्रम

B.A. Part-II (HINDI) - SYLLABUS

(2010–11)

प्रथम प्रश्न पत्र

मध्यकालीन काव्य

विद्यापति : अध्ययन एवं आलोचना

(क) संक्षिप्त जीवनवृत्त और रचनाएँ

(ख) श्रृंगार काव्य परम्परा और विद्यापति

(ग) विद्यापति के काव्य में भक्ति चेतना

(घ) निर्धारित पदों की व्याख्या (संकलन 'मध्यकालीन काव्य' हिन्दी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)

कबीरदास : अध्ययन एवं आलोचना

(क) संक्षिप्त जीवनवृत्त और रचनाएँ

(ख) निर्गुण परम्परा और कबीर

(ग) विचारधारा और साधना का स्वरूप

(घ) कबीर का युगबोध

(ङ) कबीर की भक्ति, समाज चेतना, कबीर की भाषा

(च) निर्धारित पद तथा साखियों की व्याख्या (संकलन 'मध्यकालीन काव्य' हिन्दी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)

सूरदास : अध्ययन एवं आलोचना

(क) संक्षिप्त जीवनवृत्त और रचनाएँ

(ख) कृष्णभक्ति परम्परा और सूरदास

(ग) सूरदास में वात्सल्य और श्रृंगार

(घ) सूरदास की काव्य कला और काव्य–भाषा

(ङ) निर्धारित पद तथा साखियों की व्याख्या (संकलन 'मध्यकालीन काव्य' हिन्दी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)

तुलसीदास : अध्ययन एवं आलोचना

(क) संक्षिप्त जीवनवृत्त और रचनाएँ

(ख) सगुण राम काव्य परम्परा और रचनाएँ

(ग) 'रामचरित मानस' के प्रबन्ध कौशल में आयोध्याकांड का स्थान

(घ) लोकमंगल और समन्वयात्मक दृष्टि

Vansh Dwivedi Helping Hand

(ङ) तुलसी की भक्ति का स्वरूप

(च) तुलसी का काव्य शिल्प

(छ) निर्धारित पद तथा साखियों की व्याख्या (संकलन 'मध्यकालीन काव्य' हिन्दी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)

5. मलिक मुहम्मद जायसी : अध्ययन एवं आलोचना

(क) संक्षिप्त जीवनवृत्त और रचनाएँ

(ख) प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा और जायसी

(ग) जायसी के काव्य में प्रेम, विरह–वण्रन और प्रकृति चित्रण

(घ) जायसी की भाषागत विशेषताएँ

(ङ) 'पदमावत' के नागमती वियोग खण्ड' की व्याख्या की व्याख्या (संकलन 'मध्य कालीन काव्य' हिन्दी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)

6. मीराबाई : अध्ययन एवं आलोचना

(क) संक्षिप्त जीवनवृत्त और रचनाएँ

(ख) भक्ति काव्य का स्त्री–स्वर और मीरा

(ग) मीरा के काव्य में भक्ति–भावना, प्रेम एवं विरह

(घ) गीति–काव्य परंपरा में मीरा के काव्य

(ङ) निर्धारित पदों की व्याख्या

निर्धारित पुस्तक – मीराबाई की पदावली (सं0) – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद (प्रथम खण्ड)।

(पद सं0 – 3, 7 , 19 , 23, 25, 32, 38, 45, 57, = 10 पद)

7. बिहारी

(क) मुक्तक काव्य परम्परा और बिहारी

(ख) बिहारी की कलात्मकता

(ग) बिहारी काव्य में रीति तत्व एवं बिहारी की काव्य भाषा

(घ) संकलित दोहों की व्याख्या (संकलन 'मध्यकालीन काव्य' हिन्दी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)

8. घनानन्द

(क) संक्षिप्त जीवनवृत्त और रचनाएँ

(ख) रीतिमुक्त काव्य परम्परा और घनानन्द

(ग) घनानन्द की प्रेम संवेदना और भाषा,

(घ) काव्य कला

(ङ) संकलित पदों की व्याख्या (संकलन 'मध्यकालीन काव्य' हिन्दी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)

द्वितीय प्रश्न –पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास

साहित्येतिहास की सामग्री

(क) संचयन, वर्गीकरण और उपयोग

(ख) इतिहासों का इतिहास और इतिहास लेखन की मूल दृष्टियाँ

(ग) काल विभाजन : आधार और नामकरण

आदिकाल (1400ई0 तक)

(क) साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ

(ख) साहित्य की अभिव्यक्ति का स्वरूप

(ग) (i) सिद्ध साहित्य (ii) नाथ साहित्य, (iii) जैन साहित्य, (iv) रासो साहित्य (v) अमीर खुसरो का हिन्दी साहित्य, (vi) विद्यापति का काव्य।

भक्ति काल (1400 ई0 से 1600 ई0 तक)

(क) पृष्ठभूमि और संदर्भ

सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक स्थितियाँ और भक्ति–आंदोलन की प्रेरक शक्तियाँ

(ख) निर्गुण भक्ति साहित्य

(अ) संत साहित्य और कबीर, संत साहित्य की मुख्य विशेषताएँ

(ब) प्रेमाख्यानक काव्य और जायसी, प्रेमाख्यानक काव्य की विशेषताएँ

(ग) सगुण भक्ति साहित्य

(अ) रामकाव्य परम्परा और तुलसी, रामकाव्य की विशेषताएँ

(ब) कृष्णकाव्य परम्परा और सूरदास, कृष्ण काव्य की विशेषताएँ

(घ) भक्ति कालीन काव्य संवेदना और अभिव्यक्ति विधान

(ङ) भक्ति काव्य की सामाजिक तथा सांस्कृतिक चेतना

4. रीतिकाल (1600 ई0 से 1850 ई0 तक)

(क) रूढि और मौलिकता

(अ) शास्त्रगत, शिल्पगत, छन्दगत, भाषागत प्रयोग

(ब) संवेदना, कलादृष्टि और सृजनशीलता

(स) केशव, मातिराम, देव, बिहारी और घनानन्द आदि कवियो का योगदान

(ख) रीतिकाव्य का वर्गीकरण – रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीति मुक्त

(ग) रीतिकाल की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ

5. आधुनिक काल (1850 ई0 के बाद)

(क) मध्ययुगीनता और आधुनिकता का अर्थ और अंतर

(ख) 19वीं शताब्दी के पुनर्जागरण का रूप

(ग) पुनर्जागरण और हिन्दी क्षेत्र
    (प) खड़ी बोली गद्य का विकास और प्रयोग
    (पप) साहित्य और संस्कृति

(घ) भारतेन्दु और उनके युग के लेखक
    (अ) लोक चेतना (ब) पत्रकारिता (स) साहित्य उन्मेष (द) सामाजिक दृष्टि

(ङ) द्विवेदी युग और जागरण : संवेदना और दृष्टि

(च) विभिन्न काव्यान्दोलन, प्रवृत्तियाँ, और कवि (छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, अकविता आदि।)

(छ) नाटक, रंगमंच, उपन्यास, कहानी, निबंध एवं आलोचना का विकास (संक्षिप्त इतिहास)

(ज) हिन्दी पत्रकारिता : साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान

(झ) नये गद्य रूपों का उदय : यात्रा–वृत्तान्त, रिपोर्ताज, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण आदि का संक्षिप्त परिचय।

◆◆◆

नोट: पाठ्यक्रम कालेज से मिला लेवें। किसी प्रकार की त्रुटि, परिवर्तन हेतु प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा।

B.A. Part-II Examination-2008

Three Years Degreee Course

हिन्दी प्रथम प्रश्न पत्र

New Course

निर्धारित समय : तीन घण्टे

पूर्णांक :75

सभी खण्ड अनिवार्य हैं।

खण्ड–अ

निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) सुन रसिया, अब न बजाउ बिपिन बँसिया।
बार बार चरनारबिंद गहि, सदा रहब बनि दसिया।
कि छलहुँ कि होएब के जाने, बृथा होयेत कूल हँसिया।
अनुभव ऐसन मदन–भुजगगम हृदय मोर गेल डसिया।
नंद नंदन तुअ सरन न त्यागब बलु जग होए दुरजसिया।

अथवा

कैसे नगर करौं कुटवारी
मांसु पसारिर गीध रखवारी
बैल बियाई गाइ भई बांझ
बछरहिं दूहै तीनिउं सांझ
मूसा खवट नाव बिलइया
सोवै दादुर सर्प पहरिया
नित उठि स्याम सिंध सौं जूझै
कहै कबीर कोई बिरला बूझै।

(ख) नैन चुवहिं जस महावट नीरू। तेहि जल आगि लाग सर चीरू।
दुटहिं बुंद परहिं जस ओला। बिरह पवन होइ मारे झोला।
केहिक सिंगार को पहिर पटोरा। गियं नहिं हार रही होई डोरा।

तुम्ह बिनु कंता धनि हरूइ तन तिनउर भा डोल।
तेहि पर बिरह जराइ कै चहै उड़ावा झोल।।

अथवा

संकर चापु जहाजु सागरू रघुबर बाहु बलु।
बूड़ सो सकल समाजु चढ़ा जो प्रथमहिं मोह बस।।
प्रभु दोउ चाप खंड डारे। देखि लोग सब भए सुखारे।
कौसिक रूप पयोनिधि पावन। प्रेमबारि अवगाह सुहावन।
राम रूप राकेसु निहारी। बढ़त बीचि पुलकावलि भारी।

(ग) अपुनपौ आपुन ही बिसरयौ।
जैसें स्वान काँच मन्दिर मै, भ्रमि भूँकि मरयौ।
ज्यौं सौरभ मृग–नाभि असत है, द्रुम–तृन सूँघि फिरयौ।
ज्यों सपने में रंक भूप भयौ, तसकर अरि पकरयौ।
ज्यों केहरि प्रतिबिम्ब देखि कै, आपुन कूप परयौ।
जैसे राज लखि फटिकसिला मै, दसननि जाइ अरयौ।
मर्कट मूँठि छाँड़ि नहिं दीनी, घर–घर द्वार फिरयौ।
सूरदास नलिनी को सुवटा, कहि कौने पकरयौ।

अथवा

अंग अंग नग जगमगत दीपसिखा सी देह।
दिया बढ़ायें हूँ रहै बड़ौ उज्यारौ गेह।।
पत्रा ही तिथि पाइये वा घर के चहुँ पास।
नित प्रति पून्यौई ही रहै आनन ओप उजास।।

2. विद्यापति के श्रृंगार चित्रण की विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

कबीर की निर्गुण भक्ति के स्वरूप का विवेचन कीजिए।

3. 'जायसी ने लोक कथा के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम की प्रभावशाली व्यंजना की है।' विवेचना कीजिए।

अथवा

तुलसी की काव्यभाषा पर प्रकाश डालिए।

घनानन्द की काव्यसंवेदना तथा शिल्प पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'बिहारी के काव्य में शास्त्रीयता के बावजूद लोकानुभूति की कमी नहीं है।' स्पष्ट कीजिए।

निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए :

(क) विद्यापति का रचनात्मक वैशिष्ट्य

(ख) कबीर की माया

(ग) तुलसी के राम का स्वरूप

(घ) सूर के विरह वर्णन की विशेषताएँ

(ङ) घनानन्द का बिम्ब विधान।

◆◆◆

HINDI
SECOND PAPER-2008

निर्धारित समय : तीन घण्टे पूर्णांक :75

❖ केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक खण्ड से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। प्रश्न संख्या 8 और 9 अनिवार्य है।

खण्ड–अ

1. आदिकाल के नामकरण की समस्या पर विचार कीजिए।
2. आदिकालीन रासो काव्य परम्परा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

खण्ड–ब

3. कृष्ण काव्य धारा का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसके वैशिष्ट्य का निरूपण कीजिए।
4. रीतिमुक्त साहित्य की विशेषताएँ बताते हुए इस धारा के कवियों का परिचय दीजिए।

खण्ड–स

5. भारतेन्दु युगीन गद्य साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

6. हिन्दी उपन्यास के उदभव एवं विकास पर संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।

7. छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का निरूपण कीजिए।

8. हिन्दी कहानी साहित्य के विकास में मुंशी प्रेमचन्द के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर टिप्पणी लिखिए। टिप्पणियों की अधिकतम शब्द संख्या 200 होनी चाहिए :

   (क) कबीर की भाषा

   (ख) रामचितमानस

   (ग) नाटककार जयशंकर प्रसाद

   (घ) महावीर प्रसाद द्विवेदी

   (ङ) प्रयोगवाद और अज्ञेय

   (च) बिहारी सतसई

   (छ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

◆◆◆

Vansh Dwivedi Helping Hand

B.A. Part-II Examination-2009

Three Years Degreee Course

हिन्दी प्रथम प्रश्न पत्र

New Course

निर्धारित समय : तीन घण्टे पूर्णांक :75

❖ सभी खण्ड अनिवार्य हैं।

खण्ड–अ

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) सखि हे कि पूछसि अनुभव मोय

सोई पिरीति अनुराग बखानइते, तिले तिले नूतन होय।।

जनम अवधि हम रूप निहारल, नयन न तिरपित भेल।।

सोइ मधुर बोल भुवनहि सुनल, श्रुति पथे परसन गेल।।

कत मधु यामिनी रभसे गमाओल, न बुझल कैसन केल।

लाख लाख युग हिये हिये राखल, तैओ हिय जुड़न न गेल।।

अथवा

प्रीति करि दीन्ही गरै छुरी।

जैसे बधिक चुगाइ कपट कन, पाछै करत बुरी।।

मुरली मधुर चेंप काँपा करि, मोर चंद्र फंदवारि।

बेक विलोकनि लगी, लोभ बस, सकी न पंख पसारि।।

तरफत छाँडि गए मधुबन कौ, बहुरि न कीन्ही सार।

'सूरदास' प्रभु संग कल्पतरू, उलटि न बैठह डार।।

(ख) आश्रम सागर सांत रस पूरन पावन पाथु।

सेन मनहुँ करूना सरित लिएँ जाहिं रघुनाथु।।

बोरति ग्यान बिराग करारे। बचन ससोक मिलत नद नारे।।

सोच उसास समीर तरंगा। धीरज तट तरूबर कर भंगा।।

विषम विशाद तोरावति धारा। भय भ्रम भँवर अवर्त अपारा।।
केवट बुध विद्या बढ़ि नावा सकहिं न खेइ ऐक नहिं आवा।।

अथवा

तनना। बुननां तज्यौ कबीर।
राम नाम लिखि लियौ सरीर।।
मुसि मुसि रोवै कबीर की माई। एक बारिक कैसे जीवहिं खुदाई।।
जब लगि तागा बाहौ बेही। तब लगि बिसरै राम सनेही।।
कहत कबीर सुनहु मेरी माई। पूरनहारा त्रिभुंवनराई।।

(ग) चकई निसि बिछुरै दिन मिला। हौ निसि बासर बिरह कोकिला।
रैन अकेलि साथ नहिं सखी। कैसे जिऔं बिछोही पंखी।
बिरह सैचान भँवै वन चाँड़ा जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा।
रकत ढरा आँसू गरा हाड़ भए सब संख।
धनि सारस होइ ररि मुई आइ समेटहु पंख।।

अथवा

जगत जनायो जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाहि।
ज्यों आँखिनु सब देखियै, आँखि न देखी जाँहि।।
दीरघ साँस न लेहि दुख, सुख साईहिं न भूलि।
दई दई क्यौ करतु है, दई दई सु कबूलि।।

अथवा

पहिलें घनआनंद सींचिं सुजान कहीं बबियाँ अति प्यार–पगी।
अब लाय बियोब की लाय बलाय बढ़ाय बिसास–दगानि दगी।
अँखियाँ दुखियानि कुबानि परी न कहूँ लगैं कौन घरी सु लगी।
मति दौरि थकी न लहै ठिक ठौर अमोही के माह–मिठास ठगी।

2 विद्यापति के प्रेम चरित्र में आध्यात्मिकता का कोई आग्रह नहीं है– सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

कबीर की भक्ति विषयक अवधारणा में ज्ञान और प्रेम का क्या स्थान है ? तर्क सम्मत उत्तर दीजिए।

3. रामकाव्य–परम्परा में 'रामचरितमान' का महत्व रेखांकित कीजिए।

अथवा

पद्मावत के नागमती वियोग खण्ड के आधार पर जायसी के विरह–वर्णन की विशेषताएँ बताइये।

4. 'प्रेम के पीर की रचनात्मक अभिव्यक्ति ही घनानन्द की कविता है' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

बिहारी की काव्य–प्रतिभा का परिचय दीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए।

(क) कबीर की भाषा

(ख) सूर की भक्ति का स्वरूप

(ग) रामचरित मानस की लोकप्रियता के कारण

(घ) बिहारी की सौन्दर्य दृष्टि

(ङ) जायसी की प्रेम भावना।

◆◆◆

HINDI
SECOND PAPER-2009

निर्धारित समय : तीन घण्टे — पूर्णांक :75

❖ केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक खण्ड से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। प्र 7 और 8 अनिवार्य है।

खण्ड–अ

1. आदिकालीःन हिन्दी साहित्य की परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए उसकी सामान्य प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

2. 'रासो' शब्द से आप क्या समझते हैं ? आदिकालीन प्रमुख 'रासो' ग्रन्थों का परिचय दीजिए।

खण्ड—ब

3. 'भक्तिकाल' को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
4. 'भक्तिकालीन निर्गुण धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसकी विशेषताओं पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

खण्ड—स

5. हिन्दी खड़ी बोली गद्य के विकास में भारतेन्दु जी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
6. हिन्दी उपन्यास के उद्भव और विकास पर संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।

खण्ड—द

7. छायावादी काव्य प्रवृत्तियों की सोदाहरण विवेचना कीजिए।
8. प्रयोगवादी काव्यधारा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
9. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर टिप्पणियाँ लिखिए। टिप्पणियों की अधिकतम शब्द संख्या 200 होनी चाहिए।
   (क) उपन्यास और कहानी में अन्तर
   (ख) रीति मुक्त काव्य
   (ग) भारतेन्दु मण्डल
   (घ) अष्टछाप
   (ङ) नवें दशक के बाद का कथा साहित्य
   (च) प्रेमाख्यानक काव्य
   (छ) नाटककार प्रसाद

◆◆◆

Vansh Dwivedi Helping Hand

B.A. Part-II Examination-2010

Three Years Degreee Course

हिन्दी प्रथम प्रश्न पत्र

New Course

निर्धारित समय : तीन घण्टे पूर्णांक :75

❖ सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

खण्ड–अ

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिये :

(क) चाँद–सार लाए मुख घटना करू लोचन चकित चकोरे।
अमिय धोय आँचर धनि पोछलि दह दिसि भेल उँजोरे।
जुग–जुग के बिहि बूढ़ निरस उर कामिनी कोने गढ़ली।
रूप सरूप मोयँ कहइत असंभव लोचन लागि रहली।
गुरू नितम्बभरे चलए न पाइए माझ खानि खीनि निमाई।।
मनइ विद्यापति अद्भुत कौतुक ई सब बचन सरूपे।
रूप नरायन ई रस जानथि सिबसिंध मिथिला भूपे।।

अथवा

संतौ भाई आई ग्यांन की आंधी रे।
भ्रम की टाटी सभै उड़ानीं माया रहै न बाँधी रे।।
दुचिते की दोइ थूंनि गिरांनी मोह बलेंडा टूटा।
त्रिसना छानि परी घर ऊपरि दुरमति भांडा फूटा।।
आंधी पाछै जो जल बरसै तिहिं तेरा जन भीनां।
कहै कबीर मन भया प्रगासा उदै भानु जब चीना।।

(ख) आपुनानौ आपुन ही बिसरयो।
जैसे स्वान कांच मंदिर मै, भ्रमि–भ्रमि भूँकि मरयो।
ज्यों सौरभ मृग–नाभि बसत है, द्रुम–तृन सूँघि फिरयौ।

ज्यौं केहरि प्रतिबिंब देखि कै, आपुन कूप परयो।
जैसे गज लखि फटिकसिला मैं, दसननि जाइ अरयौ।
मर्कट मूँठि छाँडि नहिं दीनी, घर–घर द्वार फिरयौ।
सूरदास नलिनी को सुबटा, कहि कौने पकरयौ।।

अथवा

सो सुख करम धरमु जरि जाऊ। जँह न राम पद पंकज भाऊ।।
जोग कुजोग ज्ञान अज्ञानू। जहँ नहिं राम प्रेम परधानू।।
तुम्ह बिन दुखी सुखी तुम्हते ही। तुम जानहु जिअँ जो जेहि केही।।
राउर आयेसु सिर सबहीं कें। बिदित कृपालासिंह गति नीकें।।

(ग) जपमाला, छापा तिलक सरै न एकौ कामु।
मन काँचे नाचै बृथा , साँचे राँचे रामु।।
जति तीरथ, हरि–राधिका–तन–द्युति करि अनुरागु।
जिहिं ब्रज–केलि–निकुंज–मग पग पग होतु प्रयागु।।

अथवा

अति सुधो सनेह को माटग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलै जति आपुनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नही।
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ, इत एक ते दूसर आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला मन लेहु पै देहु छटाँक नही।।

2. सिद्ध कीजिए, कि विद्यापति के काव्य में भक्ति और श्रृंगार–दोनो प्रवृत्तियाँ साथ–साथ विद्यमान हैं।

अथवा

कबीर की भाषा के बारे में विद्वानों के मत की समीक्षा कीजिए।

3. 'अपनी बंद आँखों से सूर ने वात्सल्य का कोना–कोना झाँक लिया' इस कथन के आलोक में सूर के वात्सल्य वर्णन की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

'पदमावत' के काव्य–सौन्दर्य पर प्रकाश डालिये।

4. बिहारी की काव्य–कला पर विस्तार से प्रकाश डालिये।

अथवा

स्वच्छंदतावादी (रीतिमुक्त) काव्य धारा में घनानंद के काव्य की विशेषताएँ बताइये।

5. निम्न में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए।

(क) कबीर की भक्ति

(ख) जायसी–काव्य में रहस्यवाद

(ग) गीतिकाव्य परंपरा में विद्यापति का स्थान

(घ) रामचरित मानस में लोकतत्व

(ङ) बिहारी की सौंदर्य–चेतना

◆◆◆

HINDI
SECOND PAPER-2010

निर्धारित समय : तीन घण्टे | पूर्णांक : 75

❖ केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक खण्ड से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। प्रश्न संख्या 8 और 9 अनिवार्य है।

खण्ड–अ

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में रामचन्द्र शुक्ल एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी का क्या योगदान है।
2. आदिकालीन सिद्ध साहित्य की विशेषताएं लिखिए।

खण्ड–ब

3. सन्त साहित्य का सामाजिक दृष्टि से क्या महत्व है, विस्तार से प्रकाश डालिए।
4. रीतिकालीन काव्य की प्रकृति ऐहिक है, विवेचन कीजिए।

खण्ड–स

5. हिन्दी कहानी के विकास में प्रेमचन्द के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
6. गद्य के परिष्कार में महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

खण्ड –द

7. प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएँ लिखिए।

8. नयी कविता की वस्तु और शिल्प पर प्रकाश डालिए।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर टिप्पणियाँ लिखिए प्रत्येक टिप्पणी अधिकतम 200 शब्दों की होनी चाहिए।

(क) छायावाद के शिल्प

(ख) रामभक्ति काव्य

(ग) भारतेन्दु युगीन नाटक

(घ) नन्ददास

(ङ) हिन्दी की दो उपन्यास लेखिकाएँ

(च) चन्दायन

(छ) नयी कहानी

◆◆◆

Vansh Dwivedi Helping Hand

B.A. Part-II Examination-2011

Three Years Degreee Course

हिन्दी प्रथम प्रश्न पत्र

New Course

र्धारित समय : तीन घण्टे पूर्णांक : 75

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

खण्ड–अ

निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

(क) हमरै गुंरू दीन्हीं अजब जरी।

कहा कहौं कछु कहत न आवै।

अम्रित रसन भरी।।

याही तै मोहिं प्यारी लागै, लेके गुपुत धरी।

पाँचों नाग पचीसौं नागिनि सूँघत तुरत मरी।।

डाइनि एक सकल जग खायौ सो भी देख डरी।

कहै कबीर भया घर निरमल सकल वियाधि टरी।।

अथवा

कुहुक–कुहुक जसि कोइलि रोंई। रक्त आँसू घुँघचि बन बोई।

पै कर मुखि नैन तन राती। को सिराव बिरह दुख ताति।

जँह–जँह ठाढ़ि होई बनवासि।

तँह–तँह होई घुघचिन्ह कै रासी।

बुँद–बुँद मह जानहुँ जीऊ। गुंजा गुंजि करैहि पिउ–पीऊ।

तेहि दुख उहै परास निपाते। लोडू बूड़ि उठै परभाते।

राते बिंब भये तेंहि लोहू। परवर पाकफाट हिय गोहू।

देखिय जहाँ सोइ होइ राता। जहाँ सो रतन कहै को बाता

(ख) कर पग गहि अँगूठा मुख मेलत।

प्रभु पौने पालनै अकेले, हरषि–हरषि अपे रैग खेलत।
सिव सोचत, विधि बुद्धि बिचारत, बर बाढ़यौ सागर जल झेलत।
बिडरि चले घन प्रलय जानि कै, दिगपति दिग–दंतीनि सकेलत
मुनि मन भीत भये, भुव कपित सेष सकुचि सहसौ फन पेलत।
उन ब्रज बासिनि बात न जानी, समूझै सूर सकट पग ठेलत।

अथवा

देख देख राधा–रूप अपार
अपरूब के बिहि आनि मिलाओल, खिति तल लाबनि–सार।
अंगहि अंग अनंग मुरझायत हेरए पडए अथीर।
मनमथ कोटि मथन करू जे जन से हेरि महि मधि गीर।
कत–कत लखिमी चरण–तल ने ओछए रंगिनि हेरि विभोरि।
करू अभिलाख मनहि पद–पंकज, अहोनिसि कौन अगारि

(ग) स्वारथु सकृत न, श्रम बृथा, देखि बिहंग, बिचारि।
बाज, पराए पानि परि, तू पच्छीन न मारि।।
भूषन भारू सँभारिहै, क्यों इहिं तन सुकुमार।
सूधे पाइ न घर परै, सोभा हीं कै भार।।

अथवा

झलकै अति सुन्दर आन गौर, छकै दृग राजति काननि छ्वै।
हँसि बोलनि में छवि–फूलन की बरसा उर–ऊपर जाति है ह्वै।
लट लोल कपोल कलोल करैं, कल कंठ बनी जलजाविल द्वै।
अंग अंग तरंग उठे दुति की, परिहै मनो रूप अबै घर च्वै।

2 क्या आप इस कथन से सहमत हैं कि 'विद्यापति के काव्य में आदिकाल और भक्तिकाल–दोनों की प्रवृत्तियाँ मौजूद हैं, इसीलिए वे संधिकाल के कवि है ? सतर्क उत्तर दीजिए।

अथवा

सूर द्वारा वर्णित गोपियों की प्रेमानुभूति का विवेचन कीजिए।

'कबीर मूलतः भक्त थे, समाज सुधारक नहीं।' इस मत की तर्क सहित विवेचना कीजिए।

अथवा

'तुलसी की सामाजिक चेतना और मूल्यबोध' पर एक विश्लेषणात्मक निबन्ध लिखिए।

'मुक्तक काव्य परंपरा में बिहारी का स्थान अद्वितीय है।' इस कथन की विवेचना कीजिए।

अथवा

'घनानंद मूलतः प्रेम की पीर' के गायक कवि हैं। इस कथन के आधार पर घनानंद के काव्य की अन्तर्वस्तु की विवेचना कीजिए।

निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखिए –

(क) विद्यापति का सौन्दर्य–वर्णन

(ख) सूर का वात्सल्य–वर्णन

(ग) मीरा की भक्ति का स्वरूप

(घ) घनानंद की विरहानुभूति

(ङ) बिहारी की कथन–भंगिमा

(च) कबीर की भाषा

◆◆◆

HINDI
SECOND PAPER-2011

निर्धारित समय : तीन घण्टे | पूर्णांक : 75

केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक खण्ड से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। प्रश्न संख्या 10 अनिवार्य है।

खण्ड–अ

1. हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परम्परा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

2. आदिकालीन काव्य प्रवृत्तियों की विवेचना कीजिए।

खण्ड–ब

3. भक्ति काल की सामाजिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।
4. भक्ति काल की समय सीमा का उल्लेख करते हुए उसकी निर्गुण शाखाओं का परिचय दीजिए।

खण्ड–स

5. रीतिकालीन काव्य दरबारी परिवेश की उपज है, विवेचन कीजिए।
6. रीतिकाव्य का वर्गीकरण करते हुए प्रत्येक की विषयगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

खण्ड–द

7. हिन्दी गद्य साहित्य के विकास में भारतेन्दु जी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
8. 'हिन्दी उपन्यास और प्रेमचन्द' शीर्षक पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।
9. छायावादी काव्य की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड–ङ

10. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर टिप्पणी लिखिए –
    (क) पृथ्वीराज रासो
    (ख) अष्टछाप
    (ग) पद्मावत
    (घ) मुक्तक बिहारी
    (ङ) भारतेन्दु मण्डल
    (छ) फोर्ट विलियम कॉलेज
    (ज) आंचलिक उपन्यास
    (झ) समकालीन कविता

◆◆◆

Vansh Dwivedi Helping Hand

B.A. Part-II Examination-2012

Three Years Degreee Course

हिन्दी प्रथम प्रश्न पत्र

New Course

निर्धारित समय : तीन घण्टे

पूर्णांक : 75

* सभी प्रश्न अनिवार्य है।

खण्ड–अ

निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

(क) भल–हर भल हरि भल तुअ कला, पित बसन खनहिं बघछला।
खन पंचानन खन भुज चारि, खन संकर खन देव मुरारि।
खन गोकुल भए चराइअ गाय, खन भिखि माँगए डमरू बजाय।
खन गाबिन्द भए लिंअ महादान, खनहि भसम करू काँख बो कान।

अथवा

एक सरीर लेल दुई वास, खन बैकुंठ खनहि कैलास।
भनइ विद्यापति बिपरित बानि, ओ नारायण ओ सूलपानि।

अथवा

राम भगति अनियाले तीर।
जेहि लागै से जानै पीर।।
तन महिं खोजौं चोट न पावौ। औषद मूरि कहां धंसि लावौं।।
एक भाइ दीसैं सब नारी। नां जानों को पियहि पियारी।।
कहै-कबीर जाकै मस्तक भाग। सभ परिहरि ताकौ मिलै सुहाग।।

(ख) मुरली तऊ गुपालहिं भावति।
सुन री सखी जदपि नंदलालहिं नाना भाँति नचावति।।
राखत एक पाई ढाढौ करि, अति अधिकार जनावति।
कोमल तन आझा ककरवावति, कटि टेढ़ी है आवति।।

अति आधीन सुजान कनौडे, गिरिधर नार नवावति।
आपुन पौढि अधर सज्जा पर कर–पल्लव पलुटावति।।
भृकुटि कुटिल नैन नासा पुट, हम पर कोप करावति।
'सूर' प्रसन्न जाति एकौ छिन, घर तैं सीस डलावति।।

अथवा

चढ़ा असाढ़ गगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।।
धूम स्याम घोरै घन घाए। सेतु घुजा बग पाँति देखाए।
खरग बीच चमकै चहुँ ओरा बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अदा लाग बीज भुई लेई। मोहिं पिय बिनु को आदर देई।
औनें घटा आई चहुँ फेरि। कंत उबारू मदन हौ धेरी।
दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जीऊ।
पुख नक्षत्र सिर ऊपर आव। हौ बिनु नाँह मँदिर को छावा।

(ग) बढत बढत संपति–सलिलु मन सरोजु बढ़ि जाइ।
घटत घटत सुन फिरि घटै, बरू समूल कुम्हिलाई
दुसह दुराजु प्रजानु कौ क्यौं न बढ़ै दुख दंद।
अधिक अँधेरो जग करत मिलि भावस रबि चंद।।

अथवा

अति सुधो सनेह को मारग हैं जहाँ नेकु सयानप बाँक नही।
तहाँ साँचे चलै तजि आपूनौ झझकै कपटी' जे निसाँक नहीं।।
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ इत एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौ पाटी पढे हौ लला मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

2 विद्यापति श्रृगार और भक्ति के कवि हैं। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

कबीर की निर्गुण भक्ति साधना पर प्रकाश डालिए।

3 मीराबाई के काव्य मे प्रेम और विरह के चित्रण की विवेचना कीजिए।

अथवा

तुलसी की भक्ति में लोककल्याणकारी चेतना की अभिव्यक्ति पर सतर्क प्रकाश डालिए।

अथवा

'अपनी बंद आँखों से सूर ने वात्सल्य का कोना–कोना झाँक लिया' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

4. 'बिहार ने अपने काव्य में गागर में सागर भने की उक्ति को चरितार्थ किया है। तर्क सहित उत्तर दीजिए।

अथवा

रीतिकालीन स्वच्छन्दतावादी काव्यधारा में धनानन्द के काव्य की विशेषताएँ लिखिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखिए –

(क) घनानन्द के प्रेम की पीर

(ख) गीतिकाव्य परम्परा में विद्यापति

(ग) जायसी का विरह

(घ) कबीर की भाषा

(घ) बिहारी की नायिका

◆◆◆

HINDI
SECOND PAPER-2012

निर्धारित समय : तीन घण्टे — पूर्णांक :75

❖ केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक खण्ड से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। प्रश्न संख्या 10 अनिवार्य है।

खण्ड–अ

1. काल विभाजन के प्रमुख आधारों का उल्लेख करते हुए 'आदिकाल' के नामकरण के औचित्य पर प्रकाश डालिए।

2. आदिकालीन साहित्य के साहित्यिक,सांस्कतिक एवं सामाजिक सन्दर्भो पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

खण्ड–ब

3. निर्गुण संत साहित्य की सामाजिक चेतना का मूल्यांकन कीजिए।
4. कृष्ण भक्ति काव्य परम्परा में सूरदास के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

खण्ड–स

5. 'रीतिकाल' के नामकरण के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए रीतिकाल की प्रमु प्रवृत्तियों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
6. रीतिमुक्त काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

खण्ड–द

7. भारतेन्दु युगीन साहित्य की प्रमुख प्रवत्तियों पर प्रकाश डालिए।
8. प्रयोगवाद क्या है? इस युग की प्रमुख साहित्यक प्रवत्तियों का विवेचन कीजिए

(क) हिन्दी आलोचना के विकास में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के योगदान क मूल्यांकन कीजिए।

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर टिप्पणी लिखिए–

(ग) जैन साहित्य की प्रवृत्ति

(घ) तारसप्तक

(ङ) रामचरितमानस

(च) सूरसागर

(छ) केशव दास का आचार्यत्व

(ज) भारतेन्दु युगीन हिन्दी पत्रकारिता

(झ) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

(ञ) आत्मकथा एवं जीवनी में अन्तर

◆◆◆

B.A. Part-II Examination-2013

Three Years Degreee Course

हिन्दी प्रथम प्रश्न पत्र

New Course

निर्धारित समय : तीन घण्टे पूर्णांक :75

❖ निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं तीन की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।

खण्ड–अ

1. (क) कैसें नगर करौं कुटवारी।
मांसु पसारि गीध रखवारी।।
बैल बियाइ गाई भई बांझ। बछरहिं दूहै तीनिउं सांझ।
मूसा खेवट नाव बिलइया। सोवे दादुर सर्प पहरिया।।
नित उठि स्यास सिंघ सौं जूझें। कहे कबीर कोई बिरला बूझै।।

अथवा

सखि रे हमर दुखक नहिं ओर।
ई भर बादर भाह भादर, सुन मंदिर मोर।।
झंपि घन गरजति संतत, भुवन भरि बरसंतिया।
कंत पहुन काम दारून, सघन खर सर हंतिया।।
कुलिस कत सत पात मुदित, मयूर नाचत मातिया।
मत दादुर डाक डाहुक फारि जायत छातिया।।
तिमिर दिग भरि घोर जामिनि अथिर बिजुरिक पाँतिया।
विद्यापति कह कहसे गमाओब, हरि बिना दिन रतिया।

(ख) मीरां लागों रंग हरी और न रंग अँटक परी।
चूडो म्हारे तिलक अरू माला, सीत बरत सिणगारो।
और सिंगार म्हारे दाय न आवे, यों गुर ग्यान हमारो।
कोई निंदो कोई बिन्दो म्हे तो गुण गोविंद का गास्या।
जिण मारग म्हारा साथ पधारें, उस मारग म्हे जास्यां।।
चोरी न करस्यां जिव न सतास्यां, काई करसी म्हारो कोई।
गज से उतर के खर नहिं चढस्यों, ये तो बात न होई।।

अथवा

सोभा–सिंधु न अंत रही री।
नंद भवन भरि पूरि उमँगि चलि, ब्रज की बीथिनि फिरत बही री।।

देखी जाइ आजु गोकुल मै, घर–घर बेंचति फिरित दही री।।
कहौं लगि कहाँ बनाई बहुत विधि, कहत न मुख सहसहुँ निबही री।।
जसुमति उदर–अगाध उदधि तै, उपजी ऐसी सबनि कहीं री।
सूरश्याम प्रभु इंदनीलमणि ब्रज–बनिता उर लाइ गही री।।

(ग) जासु ज्ञान रवि भव निसि नासा। बचन किरन मुनि कमल विकासा।।
तेहिं कि मोह ममता निअराई। यह सिय राम सनेह बढ़ाई।
बिषयी साधक सिद्ध सयाने। त्रिविध जीव जग वेद बखाने।।
राम सनेह सरस मन जासू। साधु सभा बड़ आदर तासू।।
सोह न राम प्रेम बिनु ज्ञानू। करनधार बिनु जिमि जलजानू।।

अथवा

हीन भये जल मीन अधीन कहा कदु मो अकुलानि समानै।
नीर सनेही को लाय कलंक, निरास हवै कायर त्यागत प्रानै।
प्रीति की रीति सु क्यों समझै जड़ मीत के पानि परै को प्रमानै।
या मन रकी जु सा घनआनंद, जीव की जीबनि जान ही जानै।

गीतिकाव्य परंपरा में विद्यापति की कविता का क्या महत्व हे, सोदाहरण उत्तर दीजिए।

अथवा

'कबीर वाणी के डिक्टेटर कवि हैं' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

सिद्ध कीजिए कि मीरां का दुःख उनका निजी दुःख नही पूरी स्त्री जाति का दुःख है।'

अथवा

'नागमति का विरह पूरी भक्तिकालीन कविता में अद्वितीय है इस कथन के आलोक में जायसी द्वारा प्रस्तुत नागमती–विरह वर्णन की विशेषताएँ निरूपित कीजिए।

अथवा

घनानंद का रीतिमुक्त काव्यधारा में रीतिकालीन काव्य चेतना के आधार पर मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

बिहारी के श्रृंगार वर्णन की विशेषताएँ बताइए।

निम्न में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखिए :

(क) सूर का वात्सल्य वर्णन (ख) तुलसी का आदर्श निरूपण
(ग) जायसी की सौंदर्य चेतना (घ) कबीर की सामाजिक चेतना
(ङ) मीराँ काव्य में विद्रोह का स्वर (च) घनानंद की काव्यभाषा

◆◆◆

HINDI
SECOND PAPER-2013

निर्धारित समय : तीन घण्टे पूर्णांक :75

❖ केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक खण्ड से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। प्रश्न संख्या अनिवार्य है।

खण्ड–अ

1. हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा पर प्रकाश डालते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास लेखन के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
2. आदिकालीन रासो साहित्य की प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

खण्ड–ब

3. प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा में मलिक मुहम्मद जायसी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
4. राम भक्ति काव्य परम्परा की प्रमुख प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिए।

खण्ड–स

5. रीतिबद्ध साहित्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
6. रीतिकालीन साहित्य की संवेदना पर प्रकाष डालते हुए बिहारी के महत्व का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

खण्ड–द

7. द्विवेदीयुगीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए।
8. प्रगतिवाद क्या है ? इस युग की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
9. हिन्दी उपन्यास के विकास पर प्रकाश डालिए।

खण्ड–ङ

10. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर टिप्पणी लिखिए –

(क) नाथ साहित्य
(ख) आधुनिकता का अर्थ
(ग) भातेन्दु युगीन सामाजिक चेतना
(घ) घनानंद का महत्व
(ङ) अकविता
(च) नाटककार जयशंकर प्रसाद
(छ) रिपोर्ताज की प्रमुख विशेषताएं
(ज) नयी कहानी

◆◆◆

Vansh Dwivedi Helping Hand

B.A. Part-II Examination-2014

Three Years Degreee Course

हिन्दी प्रथम प्रश्न पत्र

New Course

निर्धारित समय : तीन घण्टे पूर्णांक :

❖ सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

खण्ड–अ

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

(क) जो पै रसनां रामु न कहिबौ। तौ उपजत विनसत भरमत रहिबौ।
कंधि काल सुखि कोइ ना सोवै। राजा रंकु दोऊ मिलि रोवै।।
जीवत कछू न किया प्रवांना। मुएं मरम को काकर जांनां।
हंसा सरवर कंवल सरीर। राम रसाइन पिउ रे कबीर।।

(ख) माधव हमार रहल दुरदेस। केओ न कहे सखि कुसल सनेस।।
जुग–जुग जीवथु बसथु लाख कोस। हमर अभग हुनक देस।।
हमर करम भेल बिहि विपरीत। तेजलन्हि माधव पुरूविल प्रीति।।
हृदयक वेदन बान समान। आनक दुःख आन नहिं जान।।
भनहि विद्यापति कवि जयराम।कि करत नाह दैव भेल वाम।।

(ग) फागुन पवन झँकोरै बहा। चौगुन सीउ जाइ किमि सहा।।
तन जस पियर पात भा मोरा। बिरह न रहै पवन होई झोरा।।
तरिवर झरै झरैं बन दाँखा। भइ ओनत फूलि फरि साखा।।
करिन्ह बनाफति कीन्ह हुलासू। मो कहँ भा जग दून उदासू।।
फाग करहिं सब चांचरि जोरी। मोहित जिय लाइ दीन्हि जसि होरी।।
जौं पै पियहिं जरत अस पावा। जरत मरत भाँहि रोस न आवा।

(घ) अविगत गति कछु कहत न आवै।
ज्यों गूंगै मीठे फल को रस अंतरगत ही भावै।।
परम स्वाद सबही सु निरंतर अमित तोष उपजावै।।
मन बानी कौ आगम–अगोचर, सो जानै जो पावै।।
रूप–रेखा–गुन–जाति–जुगति–बिनु निरांलब किस धावै।।
सब विधि अगम विचारहिं तातै, 'सूर' सगुन–पद गावै।।

(ङ) बढत–बढत संपत्ति–सलिलु, मन सरोज बढि जाई।

घटत–घटत सु न फिरि घटै, बरू समूल कुम्हिलाई।।
जपमाला, छापा तिलक सरै न एकौ कामु।
मन काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु।।

(च) रूपनिधान सुजान सखी जब ते इन नैनति नेकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग–छकी मति लाज के साज–समाज बिसारे।
एक अचंभौ भयौ धनआनँद है नित ही पल–पाट उधारे।।
टारैं टरै नहिं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन मोह के तारे।।

सामाजिक चेतना के कवि के रूप में कबीर का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

जायसी की कविता में व्यक्त 'सूफी प्रेम' की विवेचना कीजिए।

'मीरा की वाणी में ऊपर से विद्रोह है, लेकिन भीतर प्रेम की स्रोतस्विनी प्रवाहित है।' इस कथन के आलोक में मीरा की काव्य प्रकृति की विवेचना कीजिए।

अथवा

तुलसीदास के 'रामचरितमानस' के आधार पर उनके 'लोकमंगल' की चेतना का निरूपण कीजिए।

सूरदास की भक्ति प्रेमाभक्ति है, जिसका आधार श्रीकृष्ण का सगुण, सरूप और सौंदर्य है।' इस कथन के आधार पर सूरदास की 'भक्ति–चेतना' का निरूपण कीजिए।

अथवा

नई कल्पना और उक्ति–सौदर्य का एक घना रिश्ता घनानंद के काव्य में है'– इस कथन के आधार पर घनानंद के काव्य शिल्प की विवेचना कीजिए।

निम्न में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए –

(क) विद्यापति की श्रृंगार–दृष्टि
(ख) कबीर की 'ब्रह्म' सम्बधी अवधारणा
(ग) धनानंद की काव्य भाषा
(घ) बिहारी का भाव–सौंदर्य
(ङ) 'नागमति' की विरहानुभूति
(च) मीरा की भक्ति का स्वरूप

◆◆◆

HINDI
SECOND PAPER-2014

निर्धारित समय : तीन घण्टे

पूर्णांक : 75

❖ केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक खण्ड से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। प्रश्न संख्या अनिवार्य है।

खण्ड-अ

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की समस्याओं पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. हिन्दी साहित्य के काल विभाजन की समस्या पर प्रकाश डालते हुए काल विभाजन के विभिन्न प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

खण्ड-ब

3. आदिकाल की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों का विवेचन कीजिए।
4. कृष्ण काव्य-परम्परा की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड-स

5. रीतिकालीन काव्य-परम्परा में बिहारी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
6. रीतिमुक्त काव्य-परम्परा की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
7. समकालीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
8. जीवनी एवं आत्मकथा में अन्तर स्पष्ट करते हुए जीवनी गद्य रूप के उदय एवं विकस का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
9. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर टिप्पणी लिखिए –
   (क) सिद्ध साहित्य
   (ख) भक्तिकालीन काव्य की सांस्कृतिक चेतना
   (ग) केशवदास का आचार्यत्व
   (घ) मध्ययुगीनता का अर्थ
   (ङ) रिपोर्ताज की मुख्य विशेषताएँ
   (च) आलोक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
   (छ) रीतिकाल की कलादृष्टि
   (ज) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पत्रकारिता।

◆◆◆

B.A. Part-II Examination-2015

Three Years Degreee Course

हिन्दी प्रथम प्रश्न पत्र

निर्धारित समय : तीन घण्टे पूर्णांक :75

- सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

खण्ड–अ

1. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पद्यांशों की ससदर्भ व्याख्या कीजिए –

(क) देख–देख राधा–रूप अपार।
अपरूब के बिहि आनि मिलाओल खिति तल लाबनि–सार।
अँगहि अंग अनंग मुरछायत हेरए पडए अथोर।
मनमथ कोटि मथन करू जे जन से हेरि महि मधि गीर।
कत–कत लखिमी चरण–तल नेओछए रंगिनी हेरि विभोर।
करू अभिलाख मनहि पद–पंकज अहोनिसि कोर अगोरि।

(ख) डगमग छाँडि दे मन बौरा।
अब तौ जरें मरें बनि आवै लीन्हौ हाथि सिंधौरा।।
होइ निसंक मगन होइ नाचै लाभ मोह भ्रम छांडै।
सूरा कहा मरन तै उरपै सती न संचै भांडै।।
लोक बेद कुल की मरजादा इहै गलें में फांसी।
आधा चलि करि पाछैं फिरिहौ होइ जगत मै हाँसी।।

(ग) कर पग गहि अँगुठा मुख मेलत।
प्रभु पौढ़े पालनै अकेले, हरिष–हरषि अपने रंग खेलत।।
सिव सोचत, बिधि बुद्धि विचारत, बट, बाढ़यौ सागर जल झेलत।
बिउरि चले घन प्रलय जानि कै, दिगपति दिग–दंतीनि सकेलत।।
मुनि मन भीत भए, भुव कंपित, केष सकुचि सहसौ पन पेलत।
उन ब्रज–बासिनि बात न जानि, समुझे सूर सकट पग ठेलत।।

(घ) भई पुछारि लीन्ह बनवासू। बैरिन सवति दीन्ह चिन्हबाँसू।
कै खर बान कसै पिय लागा। जौ घर आवै अबहूँ कागा।
हारिल भई पंथ मै सेवा। अब तहँ पठवौ कौन परेवा।
धौरी पंडुक कहु पिय ठाऊँ। जौ चित रोख न दोसर नाऊ।
जाहि बया गाहि पिय कँठ लवा। करै मेराउ सोंइ गौरवा।
कोइल भई पुकारत रही। महरि पुकारि लेहु रे दही।

पिअर तिलोर आव जल हंसा। बिरहा पैठि हिएँ कट नंसा।

(ङ) हीन भये जलमीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै।
नीर सनेही को लाय कलंक निरास है कायर त्यागमत प्रानै।
प्रीति की रीति सु क्यौं समझै जड़ मीत के पानि परै को प्रमाने।
या मन की जू दसा धनआनँद जीव की जीवनि जान ही जानै।।

(च) अंग–अंग नग जगमगत दीसिखा सी देह।
दिया बढाऐं हूँ रहै बड़ो उज्यारा गेह।।
पया ही तिथि पाइये वा घर के चहुँ पास।
नितप्रति पून्यौई रहे आनन–ओप उजास।।

2. 'विद्यापति मूलतः श्रृंगार के कवि हैं।' इस कथन के आलोक में विद्यापति के काव्य की केन्द्रीय चेतना का निरूपण कीजिए।

अथवा

कबीर की भाषा और उसके सामर्थ्य को सोदाहरण व्याख्यायित कीजिए।

3. जायसी काव्य में व्यक्त विरह के अनूठे वर्णन को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

अथवा

सूरदास का वात्सल्य वर्णन अद्वितीय है इस कथन के आधार पर सूरदास के वात्सल्य वर्णन की विशेषताएँ बताइये।

4. मीरा को हिन्दी गीतिकाव्य परंपरा में क्यो श्रेष्ठ माना जाता है–कारण सहित विवेचना कीजिए।

अथवा

बिहारी की काव्य–कला पर प्रकाश डालिए।

5. निम्न में से किन्हीं तीन पर अिप्पणी लिखिए –
(क) सूर की भक्ति
(ख) कबीर की सामाजिक चेतना
(ग) घनानंद की प्रेमानुभूति
(घ) मीरा की विद्रोही चेतना
(ङ) तुलसी काव्य में लोकमंगल
(च) जायसी का सूफी–दर्शन

◆◆◆

HINDI
SECOND PAPER-2015

निर्धारित समय : तीन घण्टे

पूर्णांक : 75

❖ केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक खण्ड से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। प्रश्न संख्या 9 अनिवार्य है।

खण्ड-अ

1. 'आदिकाल' के नामकरण संबंधी विवादों की चर्चा करते हुए इस नाम की सार्थकता पर विचार कीजिए।
2. सिद्ध और नाथ साहित्य में अन्तर स्पष्ट करते हुए नाथ साहित्य की प्रवृत्तियों को उद्घाटित कीजिए।

खण्ड-ब

3. प्रेमाख्यानक काव्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए जायसी का महत्व प्रतिपादित कीजिए।
4. 'अगर इस्लाम नही आया होता तो भी हिन्दी साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है।' इस आलोक में भक्ति आन्दोलन के उदय को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड-स

5. रीतिकाव्य का वर्गीकरण करते हुए रीतिबद्ध काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
6. रीतिकाव्य धारा के विकास में केशवदास की भूमिका को रेखांकित कीजिए।
7. भारतेन्दु युगीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
8. 'छायावाद' के नामकरण पर विचार करते हुए इसकी प्रमुख विशेषताओ को स्पष्ट कीजिए।
9. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर टिप्पणी लिखिए –
   (क) मध्ययुगीन और आधुनिकता का अन्तर
   (ख) खड़ी बोली गद्य का विकास
   (ग) रीतिकाव्य की सृजनशीलता
   (घ) साहित्य की संस्कृति
   (ङ) समकालीन कविता की दशा
   (च) आत्मकथा का संक्षिप्त परिचय
   (छ) अमीर खुसरो का हिन्दी साहित्य

◆◆◆

B.A. Part-II Examination-2016

Three Years Degreee Course

हिन्दी प्रथम प्रश्न पत्र

निर्धारित समय : तीन घण्टे   पूर्णांक :7

❖ सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

खण्ड–अ

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं तीन की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए –

(क) सखि हे कि पूछसि अनुभव मोय
सोइ पिरीति अनुराग बखानइते, तिले–तिले नूतन होय।।
जनम अवधि हम रूप निहारल, नयन न तिरपत भेल।
सोइ मधुर बोल भुवनहिं सुनल, श्रुति पथे परसन गेल।।
कत मधु यामिनी रमसे गमाओल, न बूझल कैसन केल।
लाख लाख युग हिये हिये राखल, तैयो हिय जुड़न न गेल।।
यत यत रसिक जन रसे अनुगमन, अनुभव काहु न पेख।
विद्यापति कह प्राण जुड़ाइत, लाखे न मिलल एक।।

(ख) चौंसठि दीवा जोइ करि, चौदह चंदा मांहि।
तिहिं घरि किसकौ चांदिनौं, जिहिं घरि सतगुर माहिं।।
सतगुरु सांचा सूरिवां, सबद जु बाहा एक।
लागत ही भुई मिलि गया, परा करैजे हेक।।

(ग) राजधरम सरबसु एतनोई। जिमि मन माँह मनोरथ गोई।।
बंधु प्रबोध कीन्ह बहु भांती। बिनु अधार मन तोषु न साँती।।
भरत सीलु गुर सचिव समाजू। सकुच सनेह बिबस रघुराजू।।
प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्हीं। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं।।
चरनपीठ करूनानिधान के। जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के।।
संपुट भरत सनेह रतन के। आखर जुग जनु जीव जतन के।
कुल कपाट कर कुसल करम के। बिमल नयन सेवा सुधरम के।।
भरत मुदित अवलंब लहे ते। अस सुख जस सिय रामु रहे तें।।

1. (घ) राणो म्हाँने या बदनामी लगे मीठी।
कोई निन्दो कोई बिन्दो, मैं चलूँगी चाल अपूठी।।
साँकडली सेरयाँ जन मिलिया, क्यूँ कर फिरूँ अपूठी।

सतसंगति मा ज्ञान सुणै छी, दुरजन लोगाँ नै दीठी।।
मीराँ रो प्रभु गिरधर नागर, दुरजन जलो जा अँगीठी।।

(ङ) मैं समुझौ निरधार, यह जगु काँ काँचो काँच सौ।
एकै रूप अपार, प्रतिबिंबित लखियतु जहाँ।।
मोहूँ दीजै मोषु, ज्यों अनेक अधमनु दियौ।
जौ बाँधे ही तोषु, तो बाँधौ अपने गुननु।।

(च) पहलें अपनाय सुजान सनेह सो क्यों फिरि तेह के तोरियै जू।
निरधार अधार दै धार–मँझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनंद आपने चातिक कों गुन–बाधिलै मोह न छोरियै जू।
रस प्यास के ज्याय बढ़ाय के आस बिसाय मै यां विष धोरिय जू।।

कबीर की सामाजिक चेतना को सोदाहरण व्याख्यायित कीजिए।

अथवा

'मीराँ के काव्य में स्त्री जीवन के दुःख और उससे संघर्ष की अभिव्यक्ति है'–इस कथन के आलोक में मीराँ का मूल्यांकन कीजिए।

सूर के 'विरह–वर्णन' पर निबंध लिखिये।

अथवा

जायसी की काव्य–कला पर प्रकाश डालिए।

घनानंद रीतिकाल की पारंपरिक श्रृंगार–चेतना से कैसे भिन्न हैं–स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिध कवि हैं'–इस कथन का आशय स्पष्ट करते हुए बिहारी काव्य का मूल्यांकन कीजिए।

निम्न में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिये :

(क) सूर का उपालम्भ–वर्णन
(ख) कबीर की दार्शनिक–चेतना
(ग) विद्यापति की श्रृंगार चेतना
(घ) तुलसी की सांस्कृतिक दृष्टि
(ङ) घनानंद का प्रेम वर्णन
(च) मीराँ का विद्रोह

◆◆◆

सतसंगति मा ज्ञान सुणै छी, दुरजन लोगाँ नै दीठी।।
मीराँ रो प्रभु गिरधर नागर, दुरजन जलो जा अँगीठी।।

(ङ) मैं समुझौ निरधार, यह जगु काँ काँचो काँच सौ।
एकै रूप अपार, प्रतिबिंबित लखियतु जहाँ।।
मोहूँ दीजै मोषु, ज्यों अनेक अधमनु दियौ।
जौ बाँधे ही तोषु, तो बाँधौ अपने गुननु।।

(च) पहलें अपनाय सुजान सनेह सो क्यों फिरि तेह के तोरियै जू।
निरधार अधार दै धार–मँझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनंद आपने चातिक कों गुन–बाधिलै मोह न छोरियै जू।
रस प्यास के ज्याय बढ़ाय के आस बिसाय मै यां विष घोरिय जू।।

कबीर की सामाजिक चेतना को सोदाहरण व्याख्यायित कीजिए।

अथवा

'मीराँ के काव्य में स्त्री जीवन के दुःख और उससे संघर्ष की अभिव्यक्ति है'–इस कथन के आलोक में मीराँ का मूल्यांकन कीजिए।

सूर के 'विरह–वर्णन' पर निबंध लिखिये।

अथवा

जायसी की काव्य–कला पर प्रकाश डालिए।

घनानंद रीतिकाल की पारंपरिक श्रृंगार–चेतना से कैसे भिन्न हैं–स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिध कवि हैं'–इस कथन का आशय स्पष्ट करते हुए बिहारी काव्य का मूल्यांकन कीजिए।

5. निम्न में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिये :
(क) सूर का उपालम्भ–वर्णन
(ख) कबीर की दार्शनिक–चेतना
(ग) विद्यापति की श्रृंगार चेतना
(घ) तुलसी की सांस्कृतिक दृष्टि
(ङ) घनानंद का प्रेम वर्णन
(च) मीराँ का विद्रोह

◆◆◆

Vansh Dwivedi Helping Hand

HINDI
SECOND PAPER-2016

निर्धारित समय : तीन घण्टे पूर्णांक :

❖ केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक खण्ड से एक-एक प्रश्न का उ
देना आवश्यक है। प्रश्न संख्या 9 अनिवार्य है।

खण्ड-अ

1. साहित्येतिहास लेखन में काल विभाजन और नामकरण के महत्व पर प्रक
डालिए।
2. आदिकाल के साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ को स्पष्ट कीजि

खण्ड-ब

3. प्रेमाख्यानक काव्य की काव्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
4. कृष्ण काव्य की परम्परा में सूरदास के महत्व का प्रतिपादन कीजिए।

खण्ड-स

5. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य के अन्तर को स्पष्ट करते हुए उनके योगदान
प्रकाश डालिए।
6. रीतिकाल की काव्य भाषा और छन्दगत प्रयोगों पर विस्तार से प्रकाश डालिए

खण्ड 'द'

7. 'भारतेन्दु युग प्राचीन एवं आधुनिक का संगम है', इस कथन के आलोक
भारतेन्दु युगीन काव्य पर विचार कीजिए।
8. प्रगतिवाद की साहित्यिक प्रवृत्तियों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
9. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर टिप्पणियाँ लिखिए :
   (क) खड़ी बोली गद्य
   (ख) भारतेन्दु युग की लोक चेतना
   (ग) सिद्ध साहित्य
   (घ) रामकाव्य की सृजनशीलता
   (ङ) प्रयोगवाद
   (च) जीवनी
   (छ) रीतिमुक्त काव्य
   (ज) समकालीन कविता

◆◆◆

B.A. Part-II Examination-2017

(New Course)

HINDI

प्रथम प्रश्न पत्र (मध्यकालीन काव्य)

निर्धारित समय : तीन घण्टे

पूर्णांक :75

- सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

खण्ड–अ

1. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पद्यांशों की संसदर्भ व्याख्या कीजिए –

(क) देख–देख राधा–रूप अपार।
अपरूब के बिहि आनि मिला ओल खिति तल लाबनि–सार।
अंगहि अंग अनंग मुरछायत हेरए पड़ए अथीर।
मनमथ कोटि मथन करू जे जन से हेरि महि मधि गीर।
कत–कत लखिमि चरण–तल नेओछए रंगिनि हेरि विभोरि।
करू अभिलाख मनहि पद–पंकज अहोनिसि कोर अगोरि।

(ख) संतौ भाई आई ग्यानं की आंधी रे।
भ्रम की टाटी सभै उड़ानी माया रहै न बांधी रे।
दुचिते की दोई थूंनि गिरांनीं मोह बलेंडा टूटा।
त्रिसनां छांनि परी धर उपरि दुरमति भांडा फूटा।
आंधी पाछै जो जल बरसै तिहिं तेरा जन भींनां।
कहै कबीर मनि भया प्रगासा उघै भानु जब चीन्हा।

(ग) अब कैं राखि लेहु भगवान।
हौं अनाथ बैठ्यो द्रुमन्डरिया, पारधि साधे बान।
ताकैं डर मैं भाज्यौ चाहत, ऊपर ढुक्यौ सचान।
दूहूँ भाति दुख भयौ आनि यह, कौन उबारै प्रान। ?
सुमिरति ही अहि डस्यो पारधी, कर छूट्यौ संधान।
'सूरदास' सर लग्यौ सचानहिं, जय–जय कृपानिधान।

(घ) कुहुक–कुहुक जसि कोइल रोई, रकत आँसु घुँघची बन बोई।
पै करमुखी नै तन राती, को सिराव बिरहा दुख ताती।
जहँ–जहँ ठाढ़ि होई बनबासी, तहँ–तहँ होई घुँघचिन्ह कै रासी।
बुंद–बुंद महँ जानहुँ जीऊ, गुंजा गुंजि करहिं पिउ पीऊ।
तेहिं दुख डहे परास निपाते, लोहू बूड़ि उठे परभाते।
राते बिंब भए तेहि लोहू, परवर पाक फाट हिय गोहूँ।

Vansh Dwivedi Helping Hand

देखिअ जहां सोइ होइ राता, जहाँ सो रतन कहै को बाता।
ना पावस ओहि देसरा ना हेवंत बसंत।
ना कोकिल ना पपीहरा केहिं सुनिआवहि कंत।

(ङ) कीनैं हूँ कोरिक जतन अब कहि काढ़ै कौनु।
मो मन मोहन–रूप मिलि पानी मैं कौ लौनु।।
अजौं तर्‌यौना ही रह्यौ श्रुति सेवत इक रंग।
नाक–बास बेसरि लह्यौ बसि मुकुतन कै संग।।

(च) हीन भये जलमीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै।
नीर सनेही को लाय कलंक, निरास हवै कायर त्यागत प्रानै।
प्रीति की रीति सु क्यौं समुझै जड़, मीत के पानि परै को प्रमानै।
या मन की जु दसा घनआनँद जीव की जीबनि जान ही जानै।

2 विद्यापति भक्ति और श्रृंगार के कवि है: इस कथन को स्पष्ट कीजिये। 12

अथवा

निर्गुण भक्त के रूप में, कबीर की भक्ति भावना का मूल्यांकन कीजिये।

3. मीरा की कविता में भक्ति भावना और स्त्री चेतना दोनों समाहित हैं इस प्रकाश डालिये। 12

अथवा

रामभक्त कवि के रूप में तुलसी की भक्ति का मूल्यांकन कीजिये।

4. बिहारी रीतिकाल के श्रेष्ठ श्रृंगारिक कवि हैं, इस आशय को स्पष्ट कीजिये।

अथवा

घनानन्द के काव्य सौन्दर्य पर संक्षिप्त निबंध लिखिये –

5. निम्न में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिये – 3x5=15

(क) कबीर की भाषा
(ख) गीतकार विद्यापति
(ग) सूर का विरह वर्णन
(घ) जायसी का रहस्यवाद
(ङ) बिहारी की काव्य प्रतिभा
(च) प्रेम की पीर के कवि घनान्द

HINDI-2017

द्वितीय प्रश्न पत्र (हिन्दी साहित्य का इतिहास)

निर्धारित समय : तीन घण्टे पूर्णांक : 75

निर्देश – केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक खण्ड से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। प्रश्न संख्या 9 अनिवार्य है।

खण्ड–'क'

1. काल विभाजन और नामकरण के प्रमुख आधारों का उल्लेख करते हुए आदिकाल के नामकरण के औचित्य पर प्रकाश डालिये। 11
2. आदिकालीन रासो साहित्य की प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिये। 11

खण्ड–'ख'

3. ज्ञानमार्गी संत कवियों की काव्य विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये। 11
4. रामभक्ति काव्य परम्परा की प्रमुख प्रवृत्तियों का मूल्यांकन कीजिये। 11

खण्ड–'ग'

5. रीतिकाल का वर्गीकरण करते हुए रीतिबद्ध काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 11
6. रीतिमुक्त काव्यधारा के विकास में घनानंद के योगदान का मूल्यांकन कीजिये।

खण्ड–'घ'

7. हिन्दी गद्य के विकास में भारतेन्दु जी के योगदान का मूल्यांकन कीजिये। 12
8. प्रयोगवाद की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिये। 12

खण्ड–'ङ'

9. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर टिप्पणियां लिखिये – 5x6=30

(क) सिद्ध साहित्य
(ख) रीतिबद्ध व रीतिमुक्त में अन्तर
(ग) सूफी काव्यधारा
(घ) कबीर की सामाजिक चेतना
(ङ) नयी कहानी
(च) तार सप्तक
(छ) जीवनी तथा आत्मकथा में अन्तर
(ज) छायावाद का सौन्दर्य बोध

◆◆◆

Vansh Dwivedi Helping Hand

B.A. Part-II Examination-2018
(New Course)
HINDI
प्रथम प्रश्न पत्र (मध्यकालीन काव्य)

निर्धारित समय : तीन घण्टे | पूर्णांक :75

❖ सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

खाण्ड–अ

1. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पद्यांशों की संसदर्भ व्याख्या कीजिए –

(क) सखि हे हमर दुखक नहि ओर।
ई भर बादर माह भादर, सून मंदिर मोर।।
झंपि घन गरजंति संतव, भुवन भरि बरसंतिया।
कन्त पाहुन काम दारून, सघन खर सर हंतिया।।
कुलिस कत सत पात मुदित, मयूर नाचत मातिया।
मत्त दादुर डाक डाहुक फारि जायत छातिया।।
तिमिर दिग भरि घोर जामिनि अथिर बिजुरिक पाँतिया।
विद्यापति कह कइसे गमाओब, हरि बिना दिन रातिया।।

(ख) झूठे तन कौं क्या गराबावै।
मरै तौ पल भरि रहन न पावै।।
खीर खांड घृत पिंड संवारा। प्रांन गएं लै बाहरि जारा।
जिहिं सिरि रचि रचि बांधत पागा। सो सिरू चंचु संवारहिं कागा।
हाड़ जरै जैसे लकड़ी झूरी। केस जरै जैसै त्रिनकै कूरी।
कहै कबीर नर अजहुं न जागै। जम का डंड मूंड महिं लागै।

(ग) जासु ज्ञानु रबि भव निसि नासा। बचन किरन मुनि कमल बिकासा।
तेहिं कि मोह ममता निअराई। यह सिय राम सनेह बड़ाई।।
बिषयी साधक सिद्ध सयाने। त्रिविध जीव जग बेद बखान।।
राम सनेह सरस मन जासू। साधु सभाँ बड़ आदर तासू।।
सोह न राम पेम बिनु ज्ञानू। करनधार बिनु जिमि जलजानू।।

(घ) सोभा–सिन्धु न अंत रही री।
नंद भवन भरि पूरि उमँगि चलि, ब्रज की बीथिनि फिरति बहीरी।।
देखी जाइ आजु गोकुल मैं, घर–घर बेंचति फिरित दही री।
कहँ लगि कहौं बनाइ बहुत विधि, कहत न मुख सहसहुँ निबही री।।
जसुमति–उदर–अगाध उदधि तैं, उपजी ऐसी सबनि कही री।
'सूरस्याम' प्रभु–इंद्र नीलमणि, ब्रज–बनिता उर लाइ गही री।।

(ङ:) चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा विरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बग पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुई लेई। मोहिं पिय बिनु को आदर देई।
ओनै घटा आई चहुँ फेरी। कंत उबारू मदन हौं घेरी।
दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जीऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मँदिर को छावा।

(च) अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं
तहाँ साँचे चलैं तजि आपुनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ इत एक तें दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ लला मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं

2. विद्यापति की काव्यभाषा पर विचार कीजिये ? 12

अथवा

सामाजिक चेतना के कवि के रूप में कबीर का मूल्यांकन कीजिये।

3. सूरदास 'बाल जीवन का कोना–कोना झाँक आए हैं'–इस कथन के आधार पर सूरदास के वात्सल्य वर्णन पर प्रकाश डालिये। 12

अथवा

'रामचरित मानस' के आधार पर तुलसीदास के 'लोकमंगल' की चेतना पर विचार कीजिये।

4. 'जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति और भाषायी सामासिकता हो, वही सफल मुक्तककार होगा' – इस कथन के आधार पर बिहारी के काव्य वैशिष्ट्य को उद्घाटित कीजिये। 12

अथवा

मीरा का दुःख उनका निजी दुःख नहीं, पूरी स्त्री जाति का दुःख है – उनकी कविताओं के आधार पर इस कथन की विवेचना कीजिये।

5. निम्न में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए : 3 X 5 = 15

(क) कबीर की भक्तिभावना

(ख) विद्यापति की सौंदर्य–दृष्टि

(ग) जायसी का रहस्यवाद

(घ) सूर की गोपियाँ

(ङ:) घनानंद की प्रेमभावना

(च) तुलसी के राम

(छ) बिहारी की नायिका

HINDI-2018

द्वितीय प्रश्न पत्र (हिन्दी साहित्य का इतिहास)

निर्धारित समय : तीन घण्टे पूर्णांक :

निर्देश –केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक खण्ड से एक–एक प्र का उत्तर देना आवश्यक है। प्रश्न संख्या 9 अनिवार्य है।

खण्ड–'क'

1. हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परम्परा का उल्लेख करते हुए आचार्य रामच शुक्ल की इतिहास–दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 11
2. आदिकालीन सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य की प्रवृत्तियों का विवे कीजिए।

खण्ड–'ख'

3. प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा की काव्य विशेषताएं स्पष्ट कीजिए। 11
4. कृष्णकाव्य परम्परा का विवेचन करते हुए सूरदास की काव्य–दृष्टि व विशेषताएं बताइए। 11

खण्ड–'ग'

5. रीतिकाव्य की अवधारणा स्पष्ट करते हुए रीतिकालीन काव्यधाराओं व विवेचना कीजिए। 11
6. रीतिसिद्ध कवि बिहारी द्वारा रीतियुगीन कविता में किए गये योगदान व मूल्यांकन कीजिए।

खण्ड–'घ'

7. छायावाद की साहित्यिक प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए। 12
8. हिन्दी कथा साहित्य के विकास में प्रेमचन्द के योगदान का मूल्यांकन कीजिए

51 / Shivansh

9. निम्नलि

(क) रा

(ख) सं

(ग) तु

(घ) प्र

(ङ:) सं

(च) प्र

(छ) री

(ज) न

Vansh Dwivedi Helping Hand

खण्ड–'ड़'

निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर टिप्पणियाँ लिखिये –

(क) रासो साहित्य

(ख) संत साहित्य

(ग) तुलसी के राम

(घ) प्रगतिवाद

(ङ:) संस्मरण और रिपोर्ताज

(च) प्रयोगवाद

(छ) रीतिमुक्त कवि घनानन्द

(ज) नाटककार जयशंकर प्रसाद

◆◆◆

B.A. Part-II Examination-2019

(New Course)

HINDI - (FIRST PAPER)

(मध्यकालीन काव्य)

Time : Three Hours M.M. : 75

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

खण्ड–अ

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं तीन की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : [3 x 8 = 24]

(क) देख–देख राधा रूप–अपार।
अपरूप के बिहि आनि मिलिओल खिति तल लाबनि–सार।
अंगहि अंग अनंग मुरछायत हेरए पड़ए अथीर।
मनमथ कोटि मथन करू जे जन से हरि महि मधि गीर।
कत–कत लखिमी चरण–तल ने ओछए रंगिनि हेरि विभोरि।
करू अभिलाख मनहि पद–पंकज अहोनिसि कोर अगोरि।

(ख) दुलहिनी गावंहु मंगलचार।
हम घरि आए राजा राम भरतार।
तन रत करि मैं मन रति करिहौं, पांचउ तत्त बराती।
राम देव मोरै पाहुनै आए, मैं जोबन मैंमाती।
सरीर सरोवर बेदी करिहौं, ब्रह्मा बेद उचारा।
राम देव संगि भांवरि लेंहहौं, धनि–धनि भाग हमारा।।

(ग) अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल।
काम क्रोध कौ पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल।
महामोह के नूपुर बाजत, निंदा–सब्द–रसाल।
भ्रम–भोयौ मन भयो पखावज, चलत असंगत चाल।
तृष्ना नाद करति घट भीतर, नाना बिधि दे ताल।
माया को कटि फेंटा बांध्यौ, लोभ तिलक दियौ भाल।
कोटिक कला काछि दिखराई जल–थल सुधि नहिं काल।
'सूरदास' की सबै अविद्या, दूर करौ नंद लाल।

(घ) बोले मुनिबरु समय समाना। सुनहुँ सभासद भरत सुजाना।।
धरम धुरीन भानुकुल भांनू। राजा रामु स्वबस भगवानू।।
सत्ससंघ पालक श्रुति सेंतू। राम जनमु जग मंगल हेतू।
गुरू पितु मातु बचन अनुसारी। खल दलु दलन देन हितकारी।।
नीति प्रीति परमारथ स्वारथु। कोउ न राम सम जान जथारथु।

(ङः) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलता, खिलत, लजियात।
भरे भौंन मैं करत हैं, नैननु ही सब बात।।
नेहु न नैननु कौं कछू, उपजी बड़ी बलाइ।
नीर–भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाइ।।
नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।
अली, कलीं ही सौं बंध्यौ, आगैं कौन हवाल।

(च) झलकै अति सुंदर आनन गौर, छके दृग राजत काननि हवै।
हैरि बोलनि मैं छबि–फूलन की, बरसा ऊर–ऊपर जाति है हवै।
लट लोल कपोल कलोल करै, कल कंठ बनी जलजावलि द्वै।
अंग–अंग तरंग उठे दुति की, परिहै मनौ रुप अबैधरच्वै।।

2. विद्यापति की 'भक्ति–भावना' और 'सौन्दर्य–चेतना' पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

निर्गुण भक्त कवि के रूप में कबीर का मूल्यांकन कीजिए।

'नागमति वियोग खंड' के आधार पर जायसी की काव्य संवेदना पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

'रामचरितमानस' के अयोध्या काण्ड के आधार पर तुलसी की काव्य–दृष्टि पर विचार कीजिए।

"बिहारी ने गागर में सागर भर दिया है।" इस कथन के आलोक में बिहारी की काव्य संवेदना को विवेचित कीजिए। 12

अथवा

'घनानंद प्रेम की उदात्त चेतना के कवि है' इस कथन के आधार पर घनानंद के काव्य–वैशिष्ट्य का उदघाटन कीजिए।

निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखिए : [3x5=15]

(क) कबीर की काव्य–भाषा (ख) विद्यापति की राधा

(ग) सूर का वात्सल्य चित्रण
(घ) तुलसी की समन्वय–चेतना
(ङ:) मीरा की भक्ति
(च) बिहारी की सौन्दर्य–दृष्टि
(छ) घनानंद का विरह–वर्णन

HINDI (SECOND PAPER) - 2019

(हिन्दी साहित्य का इतिहास)

Time : Three Hours M.M. : 75

निर्देश –केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक खण्ड से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। प्रश्न संख्या 9 अनिवार्य है।

खण्ड–'क'

1. साहित्येतिहास लेखन में काल विभाजन और नामकरण के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए। 11
2. सिद्ध और नाथ साहित्य में अन्तर स्पष्ट करते हुए नाथ साहित्य की प्रवृत्तियों को उद्घाटित कीजिए। 11

खण्ड–'ख'

3. "अगर इस्लाम नहीं आया होता तो भी हिन्दी साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है।" इस वक्तव्य के आलोक में भक्ति आन्दोलन के उदय को स्पष्ट कीजिए। 11
4. रामभक्ति काव्य परम्परा की प्रमुख प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिए। 11

खण्ड–'ग'

5. रीति–साहित्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 11
6. रीतिमुक्त काव्यधारा के विकास में घनानन्द के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 11

खण्ड–'घ'

7. भारतेन्दु युगीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए। 12
8. प्रगतिवाद अथवा प्रयोगवाद की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

खण्ड–'ड़'

9. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर टिप्पणियाँ लिखिये – [5 x 6 = 30]

(क) जैन साहित्य
(ख) प्रेमाख्यानक काव्य
(ग) कबीर की भाषा
(घ) भ्रमरगीत
(ङ:) बिहारी की काव्यकला
(च) उपन्यासकार प्रेमचन्द
(छ) रेखाचित्र और संस्मरण
(ज) समकालीन कविता